गुप्तकालीन साहित्य

- कला व साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रगति के कारण गुप्त काल को भारतीय इतिहास व संस्कृत साहित्य का स्वर्ण काल या क्लासिकल युग कहा जाता है.
- **मैक्स मूलर ने गुप्त काल को 'पुनर्जागरण काल'** कहा है.
- **के.एम. मुंशी** ने गुप्त काल को सर्वप्रथम '**भारत का स्वर्णयुग**' कहा है.
- आर.सी. मजूमदार व ए. एस. अल्तेकर ने इसे गुप्त-वाकाटक युग कहा है.
- गुप्त काल के सभी अभिलेखों तथा मुद्राओं पर उत्तीर्ण लेख में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है.
- **पुराण ,रामायण ,महाभारत अंतिम रूप से गुप्त काल में ही संकलित हुए.**
- **षड्दर्शन का पूर्ण विकास** भी गुप्त काल में ही हुआ.
- गुप्त काल में ही शून्य का आविष्कार व दशमलव प्रणाली का विकास हुआ था.

गुप्तकालीन साहित्य की विशेषताएं:-

- गुप्तकालीन नाटक मुख्यतः **प्रेम प्रधान व सुखांत** होते थे.
- साहित्य की रचना **संस्कृत** भाषा में की गई थी.
- धार्मिक साहित्य पर टीका के साथ-साथ स्वतंत्र साहित्य की भी रचना की गई.
- नाटकों में उच्च वर्ग के पात्र संस्कृत बोलते थे जबकि निम्न वर्ग के पात्र तथा स्त्रियां प्राकृत भाषा का प्रयोग करती थी.
- गुप्त काल के कुछ साहित्यकारों को हम उनकी रचनाओं के कारण तथा कुछ को उनके अभिलेखीय प्रशस्ति के कारण जानते हैं.
- अभिलेखीय प्रशस्तिकारों में में हरिषेण, वीरसेन, वत्सभट्टी एवं जैसे रचनाकार आते हैं.
- साहित्यिक रचनाओं के विवरणों से कालिदास, भारवि, शूद्रक, विशाखदत्त, विष्णुशर्मा, मातृगुप्त, भर्तृमेंठ जैसे रचनाकारों के बारे में जानकारी मिलती है.
- माघ, भारवि एवं श्री हर्ष को संस्कृत काव्य का शीर्षत्रयी कहा गया है.
- इनकी रचनाएं क्रमशः शिशुपालवध, किरातार्जुनीयम् एवं नैषधीयचरितम् को बृहत्त्रयी कहा जाता है.
- इसी प्रकार आयुर्वेद में बृहत्त्रयी चरक संहिता, सुश्रुत संहिता व अष्टांगहृदय को कहा जाता है.

❖ कालिदास:-

➢ कालिदास को अपनी अद्वितीय रचनाओं के कारण भारत का शेक्सपियर कहा जाता है.

➢ कालिदास गुप्त शासक चंद्रगुप्त द्वितीय के नवरत्नों में से एक थे. (अमरसिंह, वराहमिहिर, शंकु/शंकुक, धन्वन्तरि, वररूचि, वेतालभट्ट, घटकर्पर, क्षपणक). क्षपणक एक जैन साधु था, जैन धर्म में नग्न जैन मूर्ति को भी क्षपणक कहा जाता है. वेतालभट्ट तंत्र-मंत्र में माहिर था.वराहमिहिर गणितज्ञ व खगोलशास्त्री थे, धन्वन्तरि आयुर्वेद चिकित्सा के ज्ञाता थे. अन्य सभी रचनाकार/साहित्यकार थे.

➢ कालिदास के ग्रंथ वैदर्भी शैली में लिखे गए हैं.

➢ **रचनाएं:-**

- खंडकाव्य:- **1.** ऋतुसंहार **2.** मेघदूत
- महाकाव्य:- **3.**कुमारसंभव **4.** रघुवंश
- नाटक:- **5.** मालविकाग्निमित्रम् **6.** विक्रमोर्वशीय **7.** अभिज्ञान शाकुंतलम्
- इसके अलवा क्षेमेन्द्र के अनुसार कालिदास ने 'कौन्तलेश्वर दौत्य' नामक नाटक भी लिखा था.

1. **ऋतुसंहार** - सर्ग – **6**. यह कालिदास की प्रथम रचना थी, कालिदास ने इसमें ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर तथा वसंत सहित **6** ऋतुओं का वर्णन किया है. ग्रीष्म से शुरू करते हुए वसंत तक.
2. **मेघदूत** - इसकी रचना कालिदास ने वाकाटक शासक प्रवरसेन द्वितीय के दरबार में की थी. इसमें हेममाली नामक यक्ष, यक्षिणी विशालाक्षी के विरह में बादल को अपना संदेशवाहक बनाने की कल्पना करता है. इसमें 120 श्लोक हैं और यह दो भागों पूर्वमेघ व उत्तरमेघ में विभाजित है.
3. **कुमारसंभवम** - सर्ग – **17**, शिव-पार्वती के पुत्र कार्तिकेय की जन्म की कथा का वर्णन
4. **रघुवंश** - सर्ग – **19**, राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक रघुवंश के **40** इक्ष्वाकु राजाओं का चरित्र चित्रण. इसमें काव्य के सभी रसों का प्रयोग हुआ है.
5. **मालविकाग्निमित्र** - **5** अंकों के इस नाटक में कालिदास ने शुंग शासक अग्निमित्र और मालविका की प्रणय कथा का वर्णन किया है. यह कालिदास की प्रथम नाट्य रचना है.
6. **विक्रमोर्वशीयम्**- 5अंकों के इस नाटक में कालिदास ने राजा पुरुरवा एवं उर्वशी नामक अप्सरा की प्रणय कथा का वर्णन किया है. इस नाटक का दृश्यांकन झूंसी (प्राचीन नाम-प्रतिष्ठानपुर, इलाहाबाद में) में किया गया.
7. **अभिज्ञान शाकुंतलम्** – 7 अंकों का यह नाटक कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है. इसमें कालिदास ने हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत तथा कण्व ऋषि की पालित पुत्री शकुंतला के प्रणय, विरह तथा पुनर्मिलन का वर्णन किया है. इसमें एक गरीब

मछुआरे के साथ राजकर्मचारियों के दुर्व्यवहार की बात कही गई है.

इसका कथानक महाभारत के आदि पर्व से लिया गया है.

जर्मन कवि गेटे द्वारा इस नाटक की प्रशंसा की गई है.

❖ विशाखदत्त

- **देवीचंद्रगुप्तम** - इसमें चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा शकराज व रामगुप्त की हत्या तथा ध्रुव देवी से विवाह का वर्णन मिलता है.
- **मुद्राराक्षस**- यह एक नायिका विहीन नाटक है. इसमें चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा मौर्य साम्राज्य की स्थापना का वर्णन किया गया है.

❖ **मृच्छकटिकम्-** यह शूद्रक का नाटक है. मृच्छकटिकम् का अर्थ होता है मिट्टी की गाड़ी. इसमें कुल **10** अंक है. इसमें ब्राह्मण व्यापारी चारुदत्त तथा वसंतसेना नामक गणिका की प्रणय कथा का वर्णन है.

इस नाटक की रचना संस्कृत भाषा में की गई है किंतु इस नाटक में स्त्रियां व शुद्र को प्राकृत बोलते दर्शाया गया हैं. इस नाटक में न्याय व्यवस्था , भ्रष्टाचार आदि का वर्णन देखने को मिलता है.

❖ **पंचतंत्र** – विष्णु शर्मा के इस ग्रंथ का सर्वाधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है. पंचतंत्र की रचना अमर कीर्ति नामक राजा के पुत्रों को शिक्षित करने के लिए की गई थी.

इसमें पांच तंत्र है –

1. मित्र भेद – मित्रों में मनमुटाव/अलगाव की कहानियाँ
2. मित्र लाभ – मित्र प्राप्ति व उसके लाभ
3. संधि विग्रह/ काकोलुकीयम -मित्रों में कलह पैदा करना/ कौवे व उल्लुओं की कथा (हालाँकि कहानियां अन्य जानवरों की भी है)
4. लब्ध प्रणाश – हाथ लगी चीज का हाथ से निकल जाना
5. अपरीक्षित कारक- बिना परखे काम न करें

❖ **स्वप्नवासवदत्ता** – महाकवि भास का यह संस्कृत नाटक **6** अंकों का है. इसमें वत्सराज उदयन तथा वासवदत्ता के प्रणय संबंधों का वर्णन किया गया है. इसे प्रथम संपूर्ण नाटक माना जाता है.

❖ **शिशुपाल वध** – महाकवि माघ का महाकाव्य है जिसमें 20 सर्ग हैं.

❖ **काव्यादर्श व दशकुमारचरित** - दंडी/दंडिन

❖ **किरातार्जुनीयम्** - भारवि (इसमें कुल **18** सर्ग है. इसमें किरात वेशधारी शिव तथा अर्जुन के मध्य युद्ध का वर्णन है)

❖ **नीतिसार** - कामंदक, इसमें लिखा है कि, "जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से जल ग्रहण करता है उसी प्रकार राजा अपनी प्रजा से धन ग्रहण करता है."

❖ **कामसूत्र** – वात्सायन

❖ **विशुद्धिमग्ग** – बुद्धघोष, यह त्रिपिटकों पर भाष्य है.

❖ **भुवानाभ्युदम्** – शंकु

❖ **पत्र कौमुदी** – वररूचि

❖ **घटकर्पर-काव्यम, नीतिसार** - घटकर्पर/घटखर्पर, इन्होंने घोषणा की थी, कि जो व्यक्ति इन्हें अनुप्रास और यमक में परास्त कर देगा उनके यहाँ वे फूटे घड़े से पानी भरेंगे, तभी से इनका नाम घटखर्पर पड़ गया और मूल नाम लुप्त हो गया. घटखर्पर काव्यम यमक व अनुप्रास का यह अनुपम ग्रन्थ है.

❖ **चंद्र व्याकरण** - चंद्रगोमिन

❖ **न्यायावतार** – सिद्धसेन, जैन दार्शनिक द्वारा न्याय दर्शन पर

❖ **अमरकोश या लिंगानुशासन** – अमरसिंह की रचना, इसे **संस्कृत का विश्वकोश** कहा जाता है. तीन कांडों में विभक्त होने के कारण इसे '**त्रिकांड**' भी कहते हैं. संस्कृत विद्वान कहते हैं कि जिस प्रकार 'अष्टाध्यायी' पंडितों की माता है उसी प्रकार 'अमरकोश' **पंडितों का पिता** है और जो इन दोनों को ठीक से पढ़ ले वो महान पंडित बन जाता है.

❖ **रावणवध/भट्टीकाव्य** - भट्टी

❖ **काव्यालंकार** – भामह

❖ **हयग्रीव वध** – भर्तृमेंठ इसके रचयिता थे, जिन्हें 'हस्तिपक' भी कहा जाता है.

❖ **फो-क्यो-की** – फाह्यान (चन्द्रगुप्त **II** के काल में आया)

❖ **मातृगुप्त** - कल्हण की राजतरंगिणी में मातृगुप्त का विवरण मिलता है, संभवतः इन्होंने भरत मुनि के नाट्यशास्त्र पर टीका लिखी थी. कवि जयशंकर प्रसाद अपने नाटक 'स्कंदगुप्त' में बताते हैं कि कश्मीर के शासक मातृगुप्त ही कालिदास थे. उनका व कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि, नाट्यकार कालिदास अलग थे, जबकि काव्यकार कालिदास अलग व्यक्ति थे. 'मातृगुप्त" ही यह काव्यकार थे और कालिदास इनकी उपाधि थी.

विज्ञान-गणित के क्षेत्र में रचनाएं:-

❖ **आर्यभट्ट** - आर्यभट्ट का जन्म कुसुमपुर (पाटलिपुत्र) में हुआ था.

- आर्यभट्ट ने बताया था कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है.
- आर्यभट्ट ने चंद्र ग्रहण एवं सूर्य ग्रहण की व्याख्या की थी.
- पाई का मान दशमलव के चार स्थानों तक आर्यभट्ट ने ज्ञात किया.
- **रचनाएं** - आर्यभट्टियम, दशगीतिका, आर्यसिद्धांत

- आर्यभट्टियम के चार भाग हैं – 1.गीतिकापाद 2. गणितपाद 3. कालक्रियापाद 4. गोलपाद , इनमें से प्रथम दो गणित सम्बन्धी हैं व बाद के दो ज्योतिष संबंधी हैं.

❖ **वाराहमिहिर** – अवन्ती (उज्जैन) में जन्में वराहमिहिर ने बताया था, कि चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता है एवं पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है.

- इन्होंने वर्गमूल तथा घनमूल निकालने की विधि बताई थी.
- रचनाएं - पंचसिद्धान्तिका, बृहज्जातक, बृहत्संहिता

❖ **ब्रह्मगुप्त** (गुप्तकाल के नहीं हैं 598 CE born) - जन्म - भीनमाल (जालौर, राजस्थान)

- इन्होने चक्रीय चतुर्भुज की जानकारी दी.
- गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत दिया.
- रचनाएं - खण्डखाद्यक, ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त

❖ **सुश्रुत** (गुप्त काल के हैं या नहीं हैं विवाद है 7th-6th century BCE) - सुश्रुत संहिता, शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है. इसमें शल्य चिकित्सा संबंधी 121 उपकरणों की जानकारी मिलती है.

❖ **बाग्भट्ट** (7th Century CE) - अष्टांगहृदय

❖ **धन्वंतरि** – निघंटु

पुराण

➢ पुराण का शाब्दिक अर्थ है- प्राचीन

➢ पुराणों में विष्णु, शिव, दुर्गा या पार्वती जैसे देवी-देवताओं की कहानियाँ हैं । इसके अलावा संसार की रचना व राजाओं के बारे में कहानियां हैं।

➢ **पुराणों की संख्या** = 18

➢ **सबसे प्राचीन** - मत्स्य पुराण

➢ **सबसे बड़ा** - स्कन्द पुराण

➢ **सबसे छोटा** - ब्रह्माण्ड पुराण

➢ **सबसे सुरक्षित** - विष्णु पुराण

➢ **मौर्य वंश की जानकारी** - विष्णु पुराण

➢ **शुंग व सातवाहन** – मत्स्य पुराण

➢ **गुप्त काल की जानकारी** – वायु पुराण

➢ **सर्वाधिक लोकप्रिय** – भागवत पुराण (इसमें कपिल व बुद्ध को विष्णु का अवतार माना गया है)

➢ **विश्व कोष** – अग्नि व भविष्य पुराण को कहते है.

स्मृतियाँ - याज्ञवल्क्य, बृहस्पति, नारद, कात्यायन, पाराशर स्मृतियों की रचना गुप्तकाल के दौरान हुई.

गुप्तकालीन कला एवं स्थापत्य

इसके अंतर्गत हम गुप्तकालीन मूर्तिकला, चित्रकला, मंदिर, अभिलेख पर प्रकाश डालेंगे-

गुप्तकालीन अभिलेख

❖ **एरण अभिलेख :-** मध्यप्रदेश के सागर जिले में स्थित एरण अभिलेख में समुद्रगुप्त को प्रसन्न होने पर कुबेर तथा रुष्ट होने पर यमराज के समान कहा गया है.
इस अभिलेख में दत्त देवी को समुद्रगुप्त की रानी बताया गया है.
इस अभिलेख में समुद्रगुप्त को राघव एवं पृथू के समान दानवीर बताया गया है.

❖ **प्रयाग प्रशस्ति (उत्तर प्रदेश):-** यह प्रशस्ति अशोक के कौशांबी अभिलेख पर उत्कीर्ण है.

- रचनाकार - हरिषेण (महादंडनायक, संधिविग्रहक, कुमारमात्य)
- उत्कीर्ण करवाया - तिलक भट्ट
- **भाषा** - संस्कृत **लिपि** - ब्राह्मी **शैली** – चंपू **पंक्तियां** - 33
- 1834 में ए ट्रायर ने सर्वप्रथम प्रयाग प्रशस्ति को प्रकाश में लाया.
- इसमें समुद्रगुप्त के दिग्विजय अभियान, साम्राज्य विस्तार के बारे में बताया गया है.
- इसे अकबर के समय कौशांबी से मंगाकर प्रयागराज स्थित किले में स्थापित कराया गया.
- इस पर मुगल बादशाह जहांगीर तथा बीरबल के लेख भी उत्कीर्ण है.
- जहांगीर के लेख को अब्दुल्ला मुश्किन कलाम ने फारसी भाषा में लिखा था.
- प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की उपाधि - कविराज, लिच्छवीदौहित्र, धर्मप्राचीरबन्ध

❖ **उदयगिरि गुहालेख (मध्य प्रदेश):-** चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समय के दो उदयगिरी गुहा अभिलेख के बारे में सूचनाएं प्राप्त होती है

- प्रथम गुहालेख - इसका निर्माण वीरसेन 'शाव' ने करवाया था जो चंद्रगुप्त द्वितीय का संधि विग्रहक था.
- द्वितीय गुहालेख - इसका निर्माण चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के सामंत सनकानीक महाराज ने करवाया था.

❖ **सांची लेख(मध्य प्रदेश) :-** आम्रकार्दव का अभिलेख है. यह चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का सेनापति था.

❖ **महरौली स्तंभ लेख(दिल्ली):-** दिल्ली के कुतुब मीनार के निकट जामा मस्जिद के पास स्थित.

यह अभिलेख संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण कराया गया जिस पर चंद्र नामक शासक का उल्लेख होता है जिसका संबंध चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य से लगाया जाता है.

इस अभिलेख में चंद्रगुप्त विक्रमादित्य की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है.

❖ **मथुरा लेख (उत्तर प्रदेश):-** चन्द्रगुप्त **II** के शासनकाल के इस पहले अभिलेख में सर्वप्रथम गुप्त संवत का उल्लेख हुआ है. इसमें पाशुपत शैव उदिताचार्य का उल्लेख मिलता है.

❖ **गढ़वा लेख (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) :-** इसमें चंद्रगुप्त द्वितीय की उपाधि परम भागवत एवं महाराजाधिराज बताई गई है।

❖ **विलसद अभिलेख(एटा उत्तर प्रदेश) :-** कुमारगुप्त प्रथम के शासन का पहला अभिलेख है. इसमें कुमारगुप्त प्रथम तक गुप्तों की वंशावली प्राप्त होती है।

❖ **गढ़वा अभिलेख (इलाहाबाद उत्तर प्रदेश) :-** कुमारगुप्त प्रथम का भी अभिलेख यहां से मिलता है।

❖ **मंदसौर प्रशस्ति (मालवा मध्य प्रदेश):-** कुमारगुप्त के दरबारी कवि वत्सभट्टी द्वारा 9 श्लोकों के रूप में लिखित मंदसौर प्रशस्ति से कुमारगुप्त प्रथम के बारे में जानकारी मिलती है.

इसमें पट्टवाय श्रेणी मंदसौर (प्राचीन दशपुर) में मालव् संवत् 413 में एक सूर्य मंदिर के निर्माण का उल्लेख है.

लाट में रहने वाली एक तंतुवाय श्रेणी के दशपुर नगर में जाकर बसने का उल्लेख है.

मंदसौर प्रशस्ति मालवा नरेश यशोवर्मन से भी संबंधित है जिसका लेखक वासूल था.

❖ **भीतरी अभिलेख :-** **उत्तर** प्रदेश के गाजीपुर जिले की सैदपुर तहसील में स्थित है. इसमें विष्णु मंदिर के लिए एक गाँव दान में दिए जाने का उल्लेख है.

इसमें स्कंदगुप्त द्वारा हूणो व पुष्यमित्रों को पराजित करने का उल्लेख है.

इसमें समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय तथा कुमारगुप्त प्रथम की माताओं के नाम का भी उल्लेख किया गया.

❖ **जूनागढ़ लेख(सौराष्ट्र गुजरात):-** इस अभिलेख का आरम्भ विष्णु की स्तुति से हुआ है. इसमें स्कंद गुप्त द्वारा हूण आक्रमणकारी खुशनवाज को पराजित करने का उल्लेख है.

स्कंदगुप्त के समय सौराष्ट्र के गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित की देखरेख में सुदर्शन झील का पुनरुद्धार का भी वर्णन किया गया है. इसमें चक्रपालित द्वारा 'चक्रभृत' (विष्णु) मंदिर के निर्माण का उल्लेख मिलता है.

❖ **कहोम स्तंभ लेख (गोरखपुर उत्तर प्रदेश):-** स्कंद गुप्त के इस अभिलेख में **5** जैन तीर्थंकरों का उल्लेख मिलता है.

❖ **इंदौर ताम्रपत्र लेख (बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश):-** तेलियों की श्रेणी द्वारा सूर्य मंदिर को दान दिए जाने का विवरण मिलता है.

❖ **भानु गुप्त का एरण अभिलेख(मध्य प्रदेश):-** सती प्रथा का विवरण देने वाला प्रथम अभिलेख.

गुप्तकालीन मंदिर

➢ सर्वप्रथम गुप्त काल में ही मंदिर निर्माण कला का उद्भव हुआ.

➢ गुप्तकालीन मंदिर निर्माण की शैली **नागर** थी. (मुख्यतः उत्तर भारत में प्रचलित शैली)

➢ **गुप्त काल के अधिकांश मंदिर पाषाण निर्मित हैं. लेकिन भीतरगांव का मंदिर (कानपुर), सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर (छत्तीसगढ़), ईटों से निर्मित हैं.**

➢ गुप्तकालीन मंदिरों की महत्वपूर्ण विशेषता उनके शिखर थे. शुरुआती तौर पर मंदिरों की छतें चपटी हुआ करती थी किंतु आगे चलकर मंदिरों में शिखरों का निर्माण किया जाने लगा. देवगढ़ का दशावतार मंदिर शिखर युक्त मंदिर का प्रथम उदाहरण है.

➢ मंदिर **वर्गाकार चबूतरों के ऊपर** निर्मित होते थे जिसके चारों ओर सीढ़ियां बनाई जाती थी.

➢ मंदिर के अंदर एक **गर्भ गृह** बनाया जाता था जो कि एक चौकोर कक्ष होता में होता था जिसमें मुख्य मूर्ति होती थी.

➢ शुरुआत में प्रदक्षिणा पथ नहीं होता था लेकिन बाद में गर्भ गृह के चारों ओर **ढके हुए प्रदक्षिणा पथ का निर्माण** किया जाने लगा.

➢ मंदिरों की बाहरी दीवार सामान्यतः सादी होती थीं.

➢ गुप्तकालीन मंदिरों में गर्भगृह , शिखर , सभामंडप, प्रदक्षिणा पथ तथा द्वार पर गंगा यमुना की मूर्तियां होती थी.

प्रथम चरण – वर्गाकार आकार, सपाट छत, कम ऊँचाई के मंच, उथले स्तम्भों वाले मंडप

Ex. साँची का मंदिर संख्या- 17

द्वितीय चरण – पहले चरण की अधिकांश विशेषताएं इस चरण में भी थी. अब मंच की ऊँचाई ज्यादा कर दी गई. मंच के चारों और ढका हुआ प्रदक्षिणा पथ बनाया जाने लगा.

Ex. नचना कुठार का पार्वती मंदिर (पन्ना, मध्य प्रदेश)

तृतीय चरण – मंदिर पंचायतन शैली (प्रमुख देवता के मंदिर के साथ 4 गौण देवताओं के मंदिर होते थे) में बनने लगे. इस चरण में शिखरों का उद्भव हुआ, लेकिन शिखर वक्ररेखीय आकार के व अधिक ऊँचे नहीं थे.

Ex. देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर, उत्तर प्रदेश)

चतुर्थ चरण – मंदिर अधिक आयताकार होने लगे.

Ex. तेर मंदिर/त्रिविक्रम मंदिर (तेर-उस्मानाबाद, महाराष्ट्र)

पंचम चरण – उथले आयताकार किनारों वाले वृताकार मंदिर

Ex. मनियार मठ (राजगृह)

1. **देवगढ़ का दशावतार मंदिर** (प्राचीन झांसी ,ललितपुर, उत्तर प्रदेश):- बेतवा नदी के किनारेस्थित यह मंदिर विष्णु को समर्पित है.

- मंदिर की दीवारों पर शेषशैय्या पर शयन करते हुए भगवान विष्णु, नर नारायण की तपस्या के आकार में विष्णु की मूर्ती तथा गजेंद्र मोक्ष (हाथी का रूप धारण करने वाले एक असुर और विष्णु) के दृश्य उत्कीर्ण किए गए हैं.
- रामायण व महाभारत के दृश्यों का अंकन मिलता है.
- दरवाजे के बाहर गंगा-यमुना की मूर्तियों का अंकन है.
- यह मंदिर शिखर युक्त मंदिर और पंचायतन शैली का प्रथम उदाहरण है.

2. भीतरगांव का विष्णु मंदिर (कानपुर उत्तर प्रदेश) :-

- यह मंदिर ईटों से निर्मित है.
- इस मंदिर का शिखर लगभग 70 फीट ऊंचा है.

3. भूमरा का शिव मंदिर (सतना मध्य प्रदेश):-

- इस मंदिर में शिव जी रत्न जड़ित मुकुट पहने दिखाए गए हैं.
- इसमें वराह अवतार तथा नवग्रह आदि द्वार पर अंकित है.
- इस मंदिर के द्वार स्तंभ के दाएं मकरवाहिनी गंगा तथा बायें कूर्मवाहिनी (कच्छपवाहिनी) यमुना की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं.
- इस मंदिर की छत चपटी है तथा गर्भगृह के भीतर एक मुखी शिवलिंग है जिसके सामने स्तंभ युक्त मंडप है तथा उसके चारों ओर प्रदक्षिणा पथ मिलता है. इस मंदिर में 3 गर्भगृह हैं.

4. नाचना कुठार का पार्वती मंदिर (पन्ना जिला ,मध्य प्रदेश) :-

- इस मंदिर में शिव पार्वती को वाद्य यंत्रों के साथ उकेरा गया है.
- इस मंदिर का निर्माण वर्गाकार चबूतरे पर हुआ है जिसके चारों ओर प्रदक्षिणा पथ है.
- गर्भगृह की दीवारें अलंकारों से सुसज्जित है तथा गर्भगृह के सामने स्तंभ युक्त मंडप है.
- गर्भगृह के ऊपर एक लघु कक्ष बनाया गया है.
- शिल्पों में रामायण कथा का सर्वप्रथम अंकन इसी मंदिर में मिलता है.

5. तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर मध्य प्रदेश):-

इस मंदिर में गर्भगृह के सामने चार स्तंभों पर टिका हुआ एक छोटा मंडप बना है. स्तंभों के ऊपर कलश है जिस पर सिंह की मूर्तियां बनाई गई है. प्रवेश द्वार के पार्श्व पर गंगा तथा यमुना की आकृतियां उनके वाहनों के साथ उत्कीर्ण की गई हैं.

6. उदयगिरि का गुहा मंदिर (मध्य प्रदेश):- चन्द्रगुप्त **II** के संधिविग्रहक वीरसेन द्वारा निर्मित इस मंदिर में विष्णु के वराह अवतार की मूर्ति स्थापित की गई है तथा वराह अवतार को समुद्र से पृथ्वी का उद्धार करते हुए दर्शाया गया है.

7. एरण का विष्णु मंदिर (सागर मध्य प्रदेश):-

मंदिर के समक्ष बुद्ध गुप्त के समय का एक गरुड़ध्वज स्थापित किया गया है।

8. खोह का शिव मंदिर (सतना मध्य प्रदेश)

9. कंकाली देवी मंदिर (तिगवां, मध्य प्रदेश)

10. शंकरमढ़ मंदिर – (कुंडा गाँव, तिगवां)

11. पिपरिया का विष्णु मंदिर (सतना, मध्य प्रदेश)

11. सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर (छत्तीसगढ़):- ईटों से निर्मित है वक्ररेखीय शिखर का मंदिर

12. दीनाजपुर का बैग्राम मंदिर (बांग्लादेश)

13. मुंडेश्वरी मंदिर (शाहबाद, बिहार)

14. मनियार मठ (राजगृह, बिहार)

15. जरासंध की बैठक (राजगृह, बिहार)

16. सारनाथ का धमेख स्तूप (वाराणसी) – ईटों से बना 128 फीट ऊँचा

गुप्तकालीन मूर्तिकला

- मथुरा , सारनाथ व पाटलिपुत्र गुप्तकालीन मूर्तिकला का केंद्र थे.
- गुप्तकालीन मूर्तियों के निर्माण में मिट्टी, पत्थर व धातुओं का इस्तेमाल हुआ है. इन मूर्तियों पर मथुरा शैली का प्रभाव रहा है.
- सारनाथ में क्रीम कलर के बलुआ पत्थर व धातु का इस्तेमाल किया गया है.
- गुप्तकालीन मूर्ति निर्माण में शारीरिक सौंदर्य के स्थान पर **आध्यात्मिक सुंदरता पर अधिक बल** दिया गया है.
- अलंकृत प्रभामंडल, विशेष केश सज्जा, मुद्रा व आसन, परिधानों की महत्ता, आध्यात्मिकता एवं इन मूर्तियों का भारतीयकरण प्रमुख विशेषताएं रही है.
- सारनाथ की मूर्तियां गुप्तकालीन मूर्तिकला की सर्वोत्तम उदाहरण है.
- **गंगा यमुना की मूर्तियां गुप्तकाल में बनी है.**
- शिव के अर्धनारीश्वर रूप की रचना एवं उपासना गुप्त काल में ही शुरू हुई.
- एकमुखी व चतुर्मुखी शिवलिंग का निर्माण गुप्त काल में हुआ.
- **एक मुखी शिवलिंग** - भूमरा व खोह
- **चतुर्मुखी शिवलिंग की मूर्ति** - करमदण्डा (उत्तर प्रदेश)
- **शिव के हरिहर रूप की मूर्ति** – विदिशा (**MP**)
- **बुद्ध की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में पीतल की मूर्ति** – कांगड़ा (**HP**)
- **अभय मुद्रा में तांबे की** 7.5 **फीट ऊंची बुद्ध की प्रतिमा** – सुल्तानगंज (बिहार)
- **पद्मासन में बैठे बुद्ध की पाषाण मूर्ति** – सारनाथ (धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा)
- **विष्णु के वराह अवतार की मूर्तियां**- उदयगिरि एवं एरण
- **बुद्ध की खड़े समभंग मुद्रा की मूर्ति (7 फीट 2.5 इंच)** - मथुरा
- **सूर्य की मूर्तियां** - काशी व कौशांबी
- **महिषासुर का वध करती माता दुर्गा की प्रतिमा** - उदयगिरि
- **अभय मुद्रा में बैठे बुद्ध की एकमात्र प्रतिमा** – मानकुंवर (**UP**), मथुरा शैली की एकमात्र मूर्ति जो कुषाण कला से प्रभावित है.
- 10 **भुजाओं वाले तांडव करते शिव की मूर्ति** - उज्जैन
- **तीन जैन मूर्तियां ,** जिनमें दो आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभु एवं एक नौवें तीर्थंकर पुष्पदंत की - विदिशा
- टेराकोटा की अनेक मूर्तियाँ - राजघाट व अहिछत्र (दोनों **UP**)

गुप्तकालीन चित्रकला

"गुप्तकाल में चित्रकला अपनी पूर्णता को प्राप्त कर चुकी थी."- वासुदेव शरण अग्रवाल

चित्र बनाने की **फ्रेस्को व टेम्पोरा तकनीकों** का इस्तेमाल किया जाता था.

वराहमिहिर के अनुसार चित्रकार पेंटिंग की सतह पर 'वज्र लेप' व 'यम लेप'का इस्तेमाल करते थे.

अजंता की गुफाएं

- वाघोरा नदी के तट पर **महाराष्ट्र के औरंगाबाद** जिले में
- **खोज - 1819** विलियम एरिकन (मद्रास रेजीमेंट का एक सैनिक) या कैप्टन जॉन स्मिथ का ही नाम ज्यादा मिलता है.
- **1824** में सर्वप्रथम जेम्स अलेक्जेंडर ने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में इसका विवरण प्रकाशित करवाया.
- सह्याद्रि पर्वतमाला पर चट्टानों को काटकर बने गई हैं. घोड़े के पैर की नाल या अर्द्धचंद्राकार आकृति में दिखती हैं.
- अजन्ता की गुफाओं में लाल रंग की प्रचुरता व नीले रंग की अनुपस्थिति है.
- **गुफाओं की कुल संख्या - 29**
- जिनमें **9,10,19, 26** कुल **4** गुफाएं चैत्य गुफाएं हैं तथा शेष **25** विहार गुफाएं हैं.
- इनमें भी गुफा संख्या **16, 17, 19** गुप्तकालीन है. गुफा संख्या 16 व 17 वाकाटक राजा हरिसेन के सामंत वराहदेव द्वारा बनवाई गई.
- अजंता की केवल **6** गुफाओं **(1,2,9,10,16,17)** में चित्र सुरक्षित हैं
- सर्वाधिक चित्र गुफा संख्या **17** में है.

गुफा 16 – इसे अजन्ता की गुफाओं का स्वागत द्वार भी कहा जाता है, इसके द्वार पर स्वागत के लिए दो हाथियों का अंकन किया गया था.

- **मरणासन्न राजकुमारी का चित्र** (सबसे प्रसिद्ध चित्र) – नन्द द्वारा विवाह से इनकार के बाद जनपद कल्याणी
- **नन्द का संघ प्रवेश**
- **हस्ति जातक, महाउम्मग्ग जातक**
- मायादेवी का स्वप्न
- खीर लाती सुजाता
- बुद्ध और श्रावस्ती का चमत्कार
- अजातशत्रु व बुद्ध की भेंट

- वह चार दृश्य जिनसे गौतम बुद्ध में वैराग उत्पन्न हुआ था.
- उपदेश सुनते हुए भक्तों गणों का चित्र.
- बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का चित्रांकन.
- सोई हुई स्त्री का चित्र

गुफा 17- सर्वाधिक चित्र इसी गुफा में हैं.

- **इस गुफा को राशिचक्र गुफा एवं चित्रशाला भी कहा जाता है.**
- महात्मा बुद्ध के गृहत्याग का चित्र
- राहुल के समर्पण का चित्र
- माता व शिशु का चित्र
- महाकपि जातक, मृग जातक
- सिंहलावदान की कथा

गुफा 19 - यह एक चैत्य गुफा है. यह अजंता की सबसे बड़ी स्तूप गुफा है. इसमें नाग राजा और उसकी पत्नी की मूर्ति उत्कीर्णित है.

बाघ की गुफाएं-

- **अवस्थिति -** बाघिनी नदी के तट पर, धार जिलामध्य प्रदेश
- **खोज - 1818** में एफ. डेंजरफील्ड
- गुफाओं की कुल संख्या – **9 ,** बाघ की गुफाओं में वर्तमान समय में केवल गुफा संख्या **4** और **5** के चित्र सुरक्षित हैं
- इन गुफाओं में आध्यात्मवादी के स्थान पर भौतिकवादी चित्रों की प्रधानता है.
- **गुफा संख्या 2** - यह सबसे बड़ी गुफा है. स्थानीय लोग इसे गुसाई गुफा कहते थे. अब इसे पांडव गुफा के नाम से जाना जाता है. इसमें पद्मपाणि बोधिसत्व का चित्र मिलता है.
- **गुफा संख्या 3** - हाथीखाना कहा जाता है.
- **गुफा संख्या 4**– रंगमहल/चित्रशाला (Gallery of Paintings) कहा जाता है.
- **गुफा संख्या 5** – इसे स्थानीय लोग 'पाठशाला' कहते हैं.

उदयगिरी की गुफाएं - विदिशा (**MP**) में स्थित वैष्णव व शैव सम्बन्धी ये गुफाएं चन्द्रगुप्त **II** के काल की हैं. ये दीवारों पर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं. इन्हें 'मिथ्या गुफा' भी कहा जाता है. कनिंघम ने इसकी गुफा संख्या 9 को 'अमृत गुफा' कहा है.

मंदारगिरी की गुफाएं - भागलपुर (बिहार) स्थित ये गुफाएं जैन धर्म से सम्बन्धित हैं.